International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
ISSN -2393-8048, January-June 2022, Submitted in June 2022, iajesm2014@gmail.com

श्रीगंगानगर जिलें में लोक संस्कृति व परम्पराओं का अध्ययन

श्रीराम पंवार, शोधार्थी, जे.जे.टी. विश्वविद्यालय, झुंझुनू, राजस्थान
डॉ. संजू, शोध निर्देशक, जे.जे.टी. विश्वविद्यालय, झुंझुनू, राजस्थान

शोध सार

भाषायी भिन्नता बागड़ी में राजस्थानी संस्कृति की मिठास है, जबकि पंजाबी में ऊर्जा और हरियाणवी में ठेठपन। नृत्य शैली राजस्थानी घूमर सौंदर्य पर केंद्रित है, जबकि भांगड़ा जोश का प्रतीक है और हरियाणवी लूर में सरलता है। धार्मिक अभिव्यक्ति राजस्थानी संस्कृति में लोक देवताओं की पूजा प्रमुख है, जबकि पंजाबी में गुरुद्वारों और हरियाणवी में योग–संस्कृति का प्रभाव अधिक है।

श्रीगंगानगर जिला राजस्थान राज्य के उत्तर–पश्चिमी भाग में स्थित एक महत्वपूर्ण जिला है। इसे राजस्थान का पंजाब भी कहा जाता है क्योंकि यहाँ की संस्कृति, रहन–सहन और कृषि प्रणाली पंजाब से मिलती–जुलती है। यहाँ श्रीगंगानगर शहर जिला मुख्यालय है।

श्रीगंगानगर जिले का संक्षिप्त अध्ययन

1. भौगोलिक स्थिति

राजस्थान के उत्तर में स्थित सीमाएँ उत्तर में पंजाब पश्चिम में पाकिस्तान की अंतरराष्ट्रीय सीमा पूर्व में हनुमानगढ़ दक्षिण में बीकानेर सीमा लगती है।

प्रमुख नदियाँ घग्गर नदी (बरसाती नदी)

2. इतिहास

श्रीगंगानगर की स्थापना महाराजा गंगा सिंह ने बीसवीं शताब्दी के आरंभ में की थी। यह क्षेत्र पहले थार मरुस्थल का भाग था, जिसे इंदिरा गांधी नहर और गंग नहर से सिंचित कर उपजाऊ बनाया गया।

3. प्रशासनिक व्यवस्था

तहसीलें सूरतगढ़, पदमपुर, रायसिंहनगर, करणपुर, अनूपगढ़, विजयनगर आदि। लोकसभा क्षेत्र श्रीगंगानगर (सुरक्षित) विधानसभा क्षेत्र रायसिंहनगर, सूरतगढ़, श्रीगंगानगर आदि।

4. अर्थव्यवस्था

मुख्य आधार कृषि प्रमुख फसलें गेंहू, कपास, सरसों, गन्ना उद्योग कृषि आधारित उद्योग, कपास मिलें, सरसों तेल मिलें

5. सिंचाई व्यवस्था

मुख्य नहरें गंग नहर, इंदिरा गांधी नहर इन नहरों के कारण ही यह क्षेत्र राजस्थान के सबसे उपजाऊ क्षेत्रों में गिना जाता है।

6. जनजीवन व संस्कृति

यहाँ की संस्कृति पर पंजाबी प्रभाव अधिक है। प्रमुख भाषा पंजाबी, बागड़ी, हिन्दी त्योहार लोहड़ी, बैसाखी, दीपावली, होली आदि धूमधाम से मनाए जाते हैं।

7. पर्यटन स्थल

लल्ला वाला तीर्थ अनूपगढ़ का किला सूरतगढ़ थर्मल पावर स्टेशन

8. शिक्षा व स्वास्थ्य

जिला शिक्षा में अग्रणी है, कई सरकारी व निजी विद्यालय और महाविद्यालय कार्यरत हैं। स्वास्थ्य सुविधाएं भी प्रमुख शहरों में उपलब्ध हैं।

श्रीगंगानगर, राजस्थान का एक प्रमुख जिला है, जिसे राजस्थान का पंजाब भी कहा जाता है। इसकी भौगोलिक स्थिति, कृषि प्रधान संस्कृति और सीमावर्ती क्षेत्र होने के कारण यहाँ की लोक कलाएँ विविधता से भरपूर हैं। यहाँ की लोक कलाएँ न केवल मनोरंजन का माध्यम हैं, बल्कि सामाजिक मूल्यों, परंपराओं और सांस्कृतिक पहचान को सहेजने वाली जीवंत धरोहर हैं।

साहित्य पुर्नवालोकन–

प्रो.बोयत नेमिचन्द (2014) इतिहास के आईने में बावरी में बताया कि भारत में रहने वाली ऐसी अनेकों जातियां है जो प्राचीन वर्ण व जाति व्यवस्था के कारण हिन्दू होते हुऐ भी सवर्ण हिन्दूओं द्वारा समाज कि व्यवस्था में नकारी गई है।

प्रो.बोयत नेमिचन्द (2014) इतिहास के आईने में बावरी में बताया कि प्राचीन काल में शासन संचालन एवं रक्षा का कार्य क्षत्रिय वर्ण के लोग ही करतें थे, यह वर्ण प्राचीन भारतीय समाज का एक महत्वपूर्ण अंग था, इस वर्ण के लोगों की संख्या भी खुब थी, गुप्त साम्राज्य के उत्तरवर्ती काल से ही इस वर्ण के लोग सामन्ती व्यवस्था के अर्न्तगत शासन सम्बन्धी कार्यो से जुड़े हुए रहे है।

यादव सिंह वीरेन्द्र (2015) "भोजपुरी भाषा में लोक संस्कृति के विविध सरोकारों का मूल्याकंन" के शीर्षक में बताया कि आज हर क्षेत्र में राजनीति का हावी होना पश्चिम का अनुकरण, आर्थिक उदारीकरण, साम्प्रदायिक कट्टरता और राष्ट्रीयता की भावना का क्षरण इस बदलाव के स्पष्ट संकेत है, अपसंस्कृतियां

की जड़े धीरे–धीरे जम रही है, इन अपसंस्कृतियों का करारा जवाब अगर कहीं और कुछ भी है तो वह हमारी लोक संस्कृति और लोक साहित्य की अबाध परम्परा ही हैं।

शर्मा एस.एच. एवं शर्मा एम.एल. (2015) "राजस्थान का भूगोल" पुस्तक में राजस्थान की प्रमुख जनजातियों के संदर्भ में बताया कि राजस्थान कि कुछ जातियां जो यहां हजारों साल से निवास कर रही थी, या एक काल में आकर बसी, उन्होने अपना आवास अर्थव्यवस्था एवं समाज को यथावत् रखा उसमें बदलाव लाने कि प्रवृति नही हुई, अतः ऐसी जातियां दूर, पहुच से बाहर, एंकाकी तथा गहन क्षेत्रों में चली गई, तथा वहीं जीवनयापन करने लगी ऐसी जातियां आदिवासी जातियां कहलाई, इन आदिवासी जातियों में राजस्थान में प्रमुख आदिवासी जातियां भील, मीणा, गरासिया, सांसी, कंजर, बावरिया, कालबेलिया आदि है।

1. श्रीगंगानगर की प्रमुख लोक कलाएँ

(क) लोक संगीत

गिद्दा और भांगड़ा पंजाब की सीमावर्ती संस्कृति का प्रभाव स्पष्ट रूप से यहाँ देखा जा सकता है। गिद्दा महिलाओं द्वारा और भांगड़ा पुरुषों द्वारा विशेष पर्वों पर किया जाता है। ढोल, ताशा, ंसहव्रं पारंपरिक वाद्ययंत्रों का उपयोग कर लोक गीतों को प्रस्तुत किया जाता है।

(ख) लोक नृत्य

कालबेलिया, घूमर और चकरी नृत्य ये राजस्थान के अन्य क्षेत्रों की तरह यहाँ भी देखे जाते हैं, किंतु यहाँ के नृत्य में पंजाबी शैली का सम्मिलन भी होता है। मालवी नृत्य और बागड़ शैली स्थानीय जातियों द्वारा आयोजित पारंपरिक नृत्य।

(ग) लोक चित्रकला और हस्तशिल्प

मांडना ग्रामीण महिलाओं द्वारा घरों की दीवारों और आंगनों पर बनाए जाने वाले शुभ चिह्न। पिटारा चित्रकला पारंपरिक बक्सों पर की जाने वाली चित्रकारी। बागड़ी और पंजाबी कढ़ाई वस्त्रों पर की जाने वाली सुंदर कढ़ाई, जो विशेष रूप से शादी–ब्याह में लोकप्रिय है।

2. सांस्कृतिक महत्व

(क) सामाजिक एकता और सामूहिकता का प्रतीक लोक कलाएँ मेलों, त्योहारों और विवाह जैसे सामाजिक अवसरों पर समुदाय को एकत्र करती हैं और सामूहिक चेतना को मजबूत करती हैं।

(ख) इतिहास और परंपराओं का संरक्षण

लोक गीतों और कथाओं के माध्यम से क्षेत्र का इतिहास, वीर गाथाएँ और नैतिक शिक्षाएँ अगली पीढ़ी तक पहुँचती हैं।

(ग) महिला सशक्तिकरण का माध्यम

गिद्दा, लोक गायन और मांडना जैसी कलाओं में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी होती है, जिससे उन्हें सामाजिक मंच और पहचान मिलती है।

(घ) आर्थिक सहयोग का जरिया

हस्तशिल्प, कढ़ाई और लोक वाद्ययंत्रों के निर्माण से स्थानीय लोगों को रोजगार मिलता है, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बल मिलता है।

3. वर्तमान में चुनौतियाँ और संरक्षण की आवश्यकता

आधुनिकता और शहरीकरण के कारण युवा पीढ़ी लोक कलाओं से दूर होती जा रही है। प्रशिक्षण और मंच की कमी के चलते पारंपरिक कलाकारों को प्रोत्साहन नहीं मिल रहा। संस्थागत समर्थन जैसे सरकारी योजनाओं और की भागीदारी से इन कलाओं को संरक्षित किया जा सकता है।

श्रीगंगानगर की लोक कलाएँ उसकी सांस्कृतिक आत्मा हैं। इन कलाओं में स्थानीय जीवनशैली, भावनाएँ और परंपराएँ समाहित हैं। यदि उचित संरक्षण, प्रोत्साहन और समकालीन मंच उपलब्ध कराया जाए, तो ये लोक कलाएँ न केवल जीवित रहेंगी, बल्कि नई ऊँचाइयों तक पहुँच सकती हैं।

श्रीगंगानगर जिले में लोक कला का विश्लेषण

श्रीगंगानगर जिला, जो राजस्थान के उत्तर–पश्चिमी भाग में स्थित है, पंजाब और हरियाणा की सीमाओं से लगा हुआ है। यह क्षेत्र सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है और इसकी लोक कला में विविधता तथा परंपरा का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। यहाँ की लोक कला में राजस्थान, पंजाब और हरियाणा की मिश्रित छवि देखने को मिलती है। निम्नलिखित बिंदुओं में श्रीगंगानगर की लोक कला का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

1. लोक नृत्य और संगीत

श्रीगंगानगर की लोक परंपराएं विशेष रूप से नृत्य और संगीत में परिलक्षित होती हैं। गिद्दा और भांगड़ा पंजाब की निकटता के कारण गिद्दा (महिलाओं द्वारा किया जाने वाला नृत्य)

ISSN -2393-8048, January-June 2022, Submitted in June 2022, iajesm2014@gmail.com
और भांगड़ा (पुरुषों का उत्सव नृत्य) यहां विशेष लोकप्रिय हैं। कच्छी घोड़ी और घूमर राजस्थानी लोक नृत्यों की छटा भी इस क्षेत्र में दिखाई देती है, विशेषतः राजस्थानी समुदायों में। म्हारो रंगीलो राजस्थान, के लोक गीत अक्सर त्योहारों और मेलों में गाए जाते हैं। सारंगी, ढोलक, हारमोनियम, और इकतारा जैसे वाद्य यंत्रों का उपयोग होता है।

2. लोक चित्रकला

मांडना और चौक पूरण ग्रामीण महिलाओं द्वारा त्योहारी अवसरों पर दीवारों और आंगनों में बनाए जाने वाले पारंपरिक चित्र। पंजाबी रंगोली और अल्पना कला भी देखने को मिलती है, विशेषतः सरहदी गांवों में।

3. हस्तकला और कढ़ाई

फुलकारी कढ़ाई पंजाबी प्रभाव के कारण यहाँ की महिलाओं द्वारा की जाने वाली फुलकारी कढ़ाई लोकप्रिय है। राजस्थानी बंधेज और लहरिया वस्त्र कला का भी प्रयोग होता है, जो मेलों व त्योहारों में महिलाओं द्वारा पहने जाने वाले परिधानों में देखा जा सकता है। लकड़ी और मिट्टी की कलाकृतियाँरू ग्रामीण क्षेत्रों में दैनिक जीवन में प्रयुक्त वस्तुएँ भी कलात्मक होती हैं जैसे मटके, दीए, मृत्तिका मूर्तियाँ आदि।

4. जनकथाएं और लोकनाट्य

पाबूजी की फड़ या गोगाजी की कथा जैसे लोक देवताओं से जुड़ी कहानियाँ सुनाई जाती हैं, जो राजस्थान की पारंपरिक लोकधारा को दर्शाती हैं। नाटक और नौटंकी की शैली में इन कथाओं का मंचन किया जाता है।

5. त्योहारों और मेलों में लोक कला का प्रदर्शन

माघी मेला, बीकानेर का ऊंट उत्सव, और बैसाखी जैसे पर्वों पर सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी जाती हैं, जहाँ लोक नृत्य, गीत और शिल्पकला का भव्य प्रदर्शन होता है। ग्रामीण हाट और मेलों में लोक शिल्प की वस्तुएँ बिकती हैं जो पारंपरिक लोक कला का जीवंत उदाहरण हैं।

श्रीगंगानगर की लोक कला विविधता और मिश्रित सांस्कृतिक प्रभावों की एक समृद्ध परंपरा को दर्शाती है। यह क्षेत्र न केवल राजस्थानी परंपराओं को जीवंत रखता है, बल्कि पंजाब और हरियाणा की सांस्कृतिक छवियों को भी आत्मसात करता है। यहाँ की लोक कला न केवल मनोरंजन का माध्यम है, बल्कि सामाजिक एकता, धार्मिक आस्था और सांस्कृतिक उत्तराधिकार का प्रतीक भी है।

'श्री गंगानगर जिले में लोक कला संरक्षण के प्रयास

राजस्थान के श्री गंगानगर जिले की लोक कलाएँ इसकी सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। यहाँ की प्रमुख लोक कलाओं में गवरी नृत्य, कालबेलिया, घूमर, मंजीरा वादन, लोकगीत (मांड, पाबूजी की फड़, तेजाजी के गीत) आदि शामिल हैं। इन कलाओं को संरक्षित करने एवं अगली पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए विभिन्न स्तरों पर प्रयास किए जा रहे हैं। कुछ प्रमुख प्रयास निम्नलिखित हैं।

1. शैक्षिक संस्थानों द्वारा संरक्षण

जिले के कई सरकारी एवं निजी विद्यालयों में लोक नृत्य और संगीत को पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। कॉलेज स्तर पर लोक संस्कृति क्लब बनाए गए हैं, जहाँ छात्र–छात्राएँ लोक कलाओं का अभ्यास करते हैं।

2. सांस्कृतिक मेलों और उत्सवों का आयोजन

श्री गंगानगर में प्रतिवर्ष स्थानीय मेले जैसे लोहड़ी महोत्सव, माघी मेला, ग्रामीण उत्सवों में लोक कलाकारों को मंच प्रदान किया जाता है। राजस्थान सरकार द्वारा आयोजित जनजातीय लोक महोत्सव और राजस्थान उत्सव में जिले के लोक कलाकारों की भागीदारी होती है।

3. गैर–सरकारी संगठनों की भूमिका

कुछ स्वयंसेवी संस्थाएं जैसे लोक संस्कृति मंच, ग्राम कला परिषद आदि स्थानीय कलाकारों को प्रशिक्षण, आर्थिक सहयोग और प्रदर्शन के अवसर प्रदान करती हैं। ये संस्थाएं लोक कला कार्यशालाओं का आयोजन भी करती हैं, जिससे बच्चों और युवाओं में लोक कलाओं के प्रति रुचि उत्पन्न होती है।

4. डिजिटल माध्यमों का उपयोग

कुछ युवा कलाकार सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर अपनी कला को प्रस्तुत कर रहे हैं, जिससे इन कलाओं को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पहचान मिल रही है। ऑनलाइन प्रशिक्षण सत्र और वीडियो ट्यूटोरियल्स के माध्यम से भी लोक कलाओं का प्रचार–प्रसार हो रहा है।

5. सरकारी योजनाएं और प्रोत्साहन

राजस्थान लघु उद्योग निगम और संस्कृति मंत्रालय द्वारा पारंपरिक कलाकारों

को वित्तीय सहायता एवं सम्मान प्रदान किया जाता है। लोक कलाकार पेंशन योजना जैसी योजनाएं भी कलाकारों की आर्थिक स्थिरता में सहायक हैं।

6. संग्रहालय और सांस्कृतिक केंद्र

श्री गंगानगर में कुछ संग्रहालयों और कला दीर्घाओं में लोक कला से जुड़ी वस्तुओं का संरक्षण किया गया है। प्रस्तावित सांस्कृतिक केंद्रों में लोककला प्रशिक्षण केंद्रों की स्थापना की जा रही है।

'श्री गंगानगर जिले में लोक कला का महत्व और उद्देश्य निम्नलिखित बिंदुओं में स्पष्ट किया जा सकता है

महत्व

1. संस्कृति की पहचान लोक कला, श्री गंगानगर जिले की सांस्कृतिक पहचान को दर्शाती है। यह क्षेत्र के रीति–रिवाजों, परंपराओं और जीवनशैली को जीवंत रूप में प्रस्तुत करती है।
2. सामाजिक एकता लोक नृत्य, गीत और नाट्यकलाएं लोगों को एक साथ जोड़ती हैं और सामुदायिक भावना को बढ़ावा देती हैं।
3. इतिहास और परंपरा का संरक्षण यह कलाएं पीढ़ी दर पीढ़ी ज्ञान, मूल्य और ऐतिहासिक घटनाओं को संरक्षित करती हैं।
4. पर्यटन को बढ़ावा लोक कला पर्यटकों को आकर्षित करती है, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी लाभ मिलता है।
5. रोजगार का साधन लोक कलाकारों को रोजगार और पहचान मिलती है, जिससे उनकी आजीविका चलती है।

उद्देश्य

1. सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण श्री गंगानगर की लोक कलाओं को संरक्षित कर अगली पीढ़ियों तक पहुंचाना।
2. स्थानीय प्रतिभाओं को मंच प्रदान करना कलाकारों को अपनी कला प्रदर्शित करने का अवसर देना।
3. शैक्षणिक उद्देश्य स्कूलों और कॉलेजों में लोक कलाओं के माध्यम से छात्रों को अपनी संस्कृति से जोड़ना।
4. आधुनिकता में परंपरा को जीवित रखना बदलते समय में भी लोक कला की महत्ता को बनाए रखना।
5. सामाजिक संदेश देना लोक गीतों और नाटकों के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों और मुद्दों पर जन जागरूकता फैलाना।

'श्रीगंगानगर जिले में लोक संस्कृति का तुलनात्मक अध्ययन

लोक संस्कृति किसी भी क्षेत्र की आत्मा होती है, जो वहाँ की सामाजिक संरचना, जीवनशैली, आस्था, परंपराओं और रचनात्मक अभिव्यक्तियों को दर्शाती है। राजस्थान के उत्तरी छोर पर स्थित श्रीगंगानगर जिला, जिसे राजस्थान का पंजाब भी कहा जाता है, एक अनूठा क्षेत्र है जहाँ राजस्थानी, पंजाबी और हरियाणवी संस्कृतियों का मिश्रण देखने को मिलता है। इस जिले की लोक संस्कृति में विविधता, एकता और समृद्धता का अद्भुत संगम है।

भौगोलिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

श्रीगंगानगर जिला पाकिस्तान, पंजाब और हरियाणा की सीमाओं से लगा हुआ है। इस सीमावर्ती स्थिति के कारण यहाँ विभिन्न जातीय समूहों, भाषाओं और लोक परंपराओं का प्रभाव पड़ा है। मुख्यतः यहाँ राजस्थानी (बागड़ी), पंजाबी और हरियाणवी समुदायों की लोक सांस्कृतिक छवि उभरती है।

तुलनात्मक अध्ययन प्रमुख पक्षों में

सामान्यताएं

1. कृषि प्रधान जीवन तीनों लोक संस्कृतियाँ कृषि आधारित हैं और ऋतु अनुसार पर्व–त्योहार मनाए जाते हैं।
2. सामूहिकता और मेल–जोल गाँवों में आज भी मेलों, कीर्तन और नाटकों के जरिए सामाजिक एकता दिखाई देती है।
3. समान पारिवारिक संरचना संयुक्त परिवार, बड़ों का सम्मान और सामूहिक निर्णय प्रमुख हैं।
4. लोक कलाओं में गहराई सभी संस्कृतियों में गीत, नृत्य, हस्तकला और कथाकला का विशिष्ट स्थान है।

निष्कर्ष

श्रीगंगानगर जिले की लोक संस्कृति एक सांस्कृतिक संगम है, जहाँ विभिन्न परंपराएँ न

ISSN -2393-8048, January-June 2022, Submitted in June 2022, iajesm2014@gmail.com

केवल एक साथ मौजूद हैं, बल्कि एक–दूसरे को प्रभावित और समृद्ध भी कर रही हैं। इस तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भले ही राजस्थानी, पंजाबी और हरियाणवी संस्कृतियाँ अलग हों, फिर भी उनमें एकता, सहयोग और विविधता में सुंदरता देखने को मिलती है। श्रीगंगानगर का यह लोक–सांस्कृतिक मिश्रण इसकी सबसे बड़ी पहचान और शक्ति है।

संदर्भ ग्रन्थ–

- **मौर्य एस.डी.डॉ. (2021)** सामाजिक भूगोल, शारदा पुस्तक भवन पब्लिशर्स ऐंड डिस्ट्रीब्यूटर्स युनिवर्सिटी रोड, प्रयागराज–211 002 आई एस बी एन 81–86204–43–1
- **यादव सिंह वीरेन्द्र (2015)** "भोजपुरी भाषा में लोक संस्कृति के विविध सरोकारों का मूल्याकंन" कृतिका अन्तर्राष्ट्रीय अर्द्व वार्षिक शोध पत्रिका, वर्ष–8, अंक–15–16,आई.एस.एस.एन. 0975–0002, 2015, पृ.स. 187–193.
- **यादव शामू (2021)** "पार उपन्यास के संदर्भ में आदिवासी समाज का यथार्थ चित्रण" शोध ऋतु, अंक–01,आई.एस.एस.एन. 2454–6283, 2021, पृ.स. 45–47.
- राजस्थानी भाषा : अध्यापक श्री सुनीति कुमार चाटुर्ज्या, महाराणा भूपाल प्राचीन साहित्य शोध संस्थान राजस्थान विश्वविद्यापीठ उदयपुर, मई **सन् 1949** ई. पृ. 56–57.
- **राय कुमार सुशील (2021)** "सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तन एवं राष्ट्र निमार्ण" मेकल मीमांसा, वर्ष–13, अंक–02,आई.एस.एस.एन. 0974–0118, 2021, पृ.स. 154–161.
- **वैष्णव के.टी. डॉ 2004** छतीसगढ की अनुसूचित जनजातिया, जाति अनुसंधान एंव प्रशिक्षण संस्थान रायपुर
- **वशिष्ठ नीतू (2018)** "वर्तमान भारतीय लोक कला एवं उसका भविष्य" शोध वैचारिकी, वर्ष–7, अंक–01,आई.एस.एस.एन. 2277–6419, 2018, पृ.स. 44–47.
- **शर्मा डी.डी. एवं गुप्ता एम.एल. (2012)** "सामाजिक मानवशास्त्र" साहित्य भवन पब्लिकेशन : आगरा, आई.एस.बी.एन. 81–7288–095–2, 2012, पृ.स. 44–46

SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY